# 'हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श'

## (यमदीप और जिंदगी 50 –50 उपन्यासों के संदर्भ में)

**समाधान शिवाजी नागणे**

शोध छात्र

कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, पंढरपुर

दूरभाष – 9975753381

ई मेल – snagane06@gmail.com

**सारांश:**

विश्व के सभी समाजों में किन्नरों का भी एक वर्ग है–जिसे थर्ड जेंडर, हिजड़ा, तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, यूनक, खोजवा, मौगा, छक्का, पावैया, खुसरा,जनखा, अनरावनी, शिखण्डी, ख्वाजासरा आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है । आज हम 21 वीं शती के मशीनी युग में जी रहे हैं जहाँ हर काम बटन दबाने से ही चुटकियों में संपन्न हो जाते हैं । मगर मन व मस्तिष्क आज भी दकियानूसी विचारों की संकीर्णता की बेड़ियों में जकड़े हुये हैं । किन्नर समुदाय की स्थिति अत्यन्त दयनीय है,उनकी झोली में असीम पीड़ा है,जिससे हमारा समाज कोसों दूर हैं । संसद में पेश हुए विधेयक के जरिये किन्नरों के अधिकारों के संरक्षण के लिए केन्द्रीय कैबिनेट ने 'ट्रांसजेंडर पर्सन'बिल 2016 को मंजूरी दे दी ।

हिन्दी साहित्य में 'किन्नर विमर्श' अभी अपरिपक्व अवस्था में सामाजिक, शारीरिक,मानसिक भेद शोषण के दौर में से गुज़र रहा है । किन्नर समाज को स्वयं अपने प्रति संवेदनशील होने की भी आवश्यकता है । किन्नर समाज के बच्चों को सामान्य बच्चों के समान वातावरण प्रदान करना समाज की जिम्मेदारी है ताकि किन्नर समाज का आर्थिक,राजनीतिक व सामाजिक दृष्टि से उत्थान संभव हो सके।

**बीज शब्द:** हिजड़ा, शैक्षिक सशक्तिकरण, शारीरिक भेद, यमदीप, बुनियादी हक, असरदार पैरवी, जिंदगी, संवेदनशीलता ।

**उद्देश्य:**

1) किन्नर समुदाय का यथार्थ समाज के सामने लाना ।

2) किन्नर समुदाय के दु:ख एवं दर्द को चित्रित करना ।

3) समाज और परिवार का किन्नरों के प्रति देखने का रवैया दिखाना ।

**प्रस्तावना :**

साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होता है । इसलिए साहित्यकार समाज में जो कुछ घटित होता है, उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में साहित्यकार करता है । वस्तुत: समाज में जो कुछ भी व्याप्त हैं, वह साहित्यकार की संवेदना और चिंतन का विषय होता है । जिसकी अभिव्यक्ति साहित्य में कर साहित्यकार समाज में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है । आज विश्व धरातल पर मानव अधिकारों की चर्चा ने आंदोलन का रुप धारण कर लिया है । हाशिए के समाज को मुख्यधारा में लाने की कोशिशें हो रही हैं । जैसे स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्याक विमर्श, किसान विमर्श आदि। समाज के कई उपेक्षित वर्गों पर समकालीन साहित्य में चिंतन हो रहा है, परंतु समाज बहिष्कृत, लिंग निरपेक्ष 'किन्नर' समुदाय के विषय में कोई बड़ी चर्चा नहीं दिख रही है ।

ऐसा नहीं कि साहित्य में किन्नर समुदाय पर पहली बार लिखा गया है। इसके पूर्व महाभारत काल में भी शिखंडी नामक ऐसा ही पात्र था, जो किन्नर था। अर्जुन ने भी अपने अज्ञातवास काल में बृहनल्ला का रूप धारण कर लिया था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार हिंदू और मुस्लिम राजाओं ने रानियों की पहरेदारी के लिए किन्नरों को रखा था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी किन्नरों का उल्लेख मिलता है। किन्नर समुदाय को धर्म ने, पुराणों ने स्वीकारा जिनका इतिहास 4000 साल पुराना है, परंतु आज भी किन्नर समाज की व्यथा से पीड़ित है।

संसार में केवल दो लिंगो स्त्री और पुरुष को मान्यता मिली है। लेकिन इन दोनों के अलावा एक और वर्ग भी समाज में उपस्थित है जिसका नाम किन्नर है। यह वर्ग संसार के सभी समाजों में तिरस्कार और अवेहलना का शिकार बन गया है। समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति अत्यंत दयनीय है। जिसका कारण समाज एवं सरकार द्वारा किन्नरों के साथ उपेक्षित व्यवहार किया जाना है।

**किन्नर से तात्पर्य :**

किन्नर को हिजड़ा, उभयलिंगी, तृतीयलिंगी, खुसरा, मौसी आदि कई नामों से पहचाना जाता है। किन्नर शब्द हिंदी में दो शब्दों 'कि' और 'नर' से मिलकर बना है, जिसका तात्पर्य हिमाचल की जनजाति से नहीं है, बल्कि उस वर्ग से है, जो रुपेण न स्त्री है न पुरुष। वस्तुतः जिसे जन सामान्य की भाषा में हिजड़ा कहा जाता है। हिजड़ों को परिमार्जित भाषा में किन्नर कहा जाता है।

**विमर्श का अर्थ :**

आधुनिक साहित्य में विमर्श की अवधारणा 1960 के बाद दृष्टिगोचर होती है। शब्द प्रयोग की दृष्टि से विमर्श शब्द अत्यंत प्राचीन है। इसका अर्थ है "सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, किसी बात या विषय पर कुछ सोचना, समझना, विचार करना, गुण– दोष आदि की आलोचना करना या मीमांसा करना, जांचना, पर, किसी से परामर्श या सलाह करना।"[1] अतः विमर्श शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ विचार – विमर्श, सोचना, समझना, आलोचना करना है।

**हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श**

साहित्य के क्षेत्र में वर्तमान समय में लिंग निरपेक्ष, समाज बहिष्कृत किन्नर या थर्ड जेंडर समुदाय पर चिंतन और चर्चा तेजी से हो रही है। हिंदी साहित्य में नई सदी के आरंभ से यह विमर्श प्रभावी रुप से दिखाई देता है। इसी कारण नीरजा माधव का 'यमदीप', निर्मला गुराडिया का 'गुलाम मंडी', प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली', महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा', भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50–50' आदि उपन्यासों में किन्नर जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। किन्नरों पर लिखे गए उपन्यासों में उनकी व्यथा–कथा को चित्रित किया है। हिंदी कथा साहित्य में अभी उतनी मात्रा में किन्नर विमर्श पर उपन्यास नहीं लिखे गए। लेकिन फिर भी हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श पर चर्चा हो रही है।

नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास हिंदी का किन्नर समुदाय पर लिखा हुआ पहला उपन्यास माना जाता है। 'यमदीप' उपन्यास में किन्नर समुदाय का रहन– सहन, संताप, अंधविश्वास, उनकी विडंबना, दुख, दर्द, अकेलापन, समाज और परिवार द्वारा उपेक्षा को चित्रित किया है। उपन्यास का पूरा कथानक किन्नर समुदाय के इर्द–गिर्द घूमता है। उपन्यास की नायिका नाजबीबी के माध्यम से भाई द्वारा तिरस्कार, बेटा– बेटी मोह को चित्रित किया है। नाजबीबी इन समस्याओं से लड़ती हुई, अपने अस्तित्व को स्थापित करने का प्रयास करती है। उसके जन्म से ही घरवाले परेशान होते हैं, क्योंकि बच्चा किन्नर है। नाजबीबी पढ़ाई में तेज थी। लेकिन आठवीं कक्षा में पढ़ते समय कुदरत के करिश्मे के कारण उसे अपने पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। उसमें स्त्रीयोचित शरीरांग के साथ दाढ़ी, मूछ भी आ जाती है। समाज उसे देखकर हंसी– मजाक करता है।

नाजबीबी की माता उससे बहुत प्यार करती है । उसे अपने पास रखना चाहती हैं, परंतु सभ्य समाज द्वारा उन्हे विवश किया जाता है कि वह बच्चे को किन्नर समुदाय में छोड़ दे । वह उसे पढ़ा–लिखाकर अपने पैरों पर खड़ा करना चाहती थी । किन्नरों को शिक्षा लेना भी नसीब नहीं है, क्योंकि इन्होंने जब भी शिक्षा लेनी चाही उस समय उन्हें अपमानित होना पड़ा है । इसी वास्तविकता को चित्रित करते हुए महताब गुरु कहते हैं कि "माताजी किसी स्कूल में आजतक हिजड़े को पढ़ते–लिखते देखा है । किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है, पुलिस में, मास्टरी में, कलेक्टरी में, किसी में भी । अरे इसकी दुनिया यही है, माताजी! कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओं, लिखाओं, नौकरी दो जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही है ।"[2]

नाजबीबी को किन्नरों की बस्ती में छोड़ा जाता है । किन्नर लोग नाच–गाकर पैसा कमाते हैं । साधारण लोग उनसे दूर रहना पसंद करते हैं, लेकिन वही किन्नर मानवीयता के कारण लोगों की मदद करते हुए दिखाई देते हैं । एक पागल औरत प्रसव पीड़ा में तड़प रही थी तब किन्नर उसकी मदद करते हैं । वही साधारण लोग उसकी मदद नहीं करते । प्रसूति के बाद उस पागल औरत की मृत्यु होती है । तब उसकी बच्ची को कोई अपनाता नहीं तब नाजबीबी कहती है– "अरे हम हिजड़े है, हिजड़े... इंसान है क्या मुंह फेर ले ।"[3] नीरजा माधव जी इस उपन्यास के माध्यम से यह बताना चाहती है कि साधारण लोग संवेदनशून्य है । इसके विपरीत किन्नर सभी से हमदर्दी रखते हैं । किन्नर लोग किसी बच्चे को अपने साथ नहीं रख सकते हैं । समाज में सभी को जीने का अधिकार है मात्र किन्नरों को छोड़कर क्योंकि वे समाज से तिरस्कृत है । समाज उनको कोसता है, उन पर हंसी–मजाक करता है । नाजबीबी जब उस बच्ची को स्कूल में भर्ती कराने जाती है तो उन्हें देखकर स्कूल की अध्यापिकाएं और छात्र कानफूसी करते हैं । तब वह कहती है– "जब हम धंधे पर नहीं होते, बहनजी तो इस तरह का मजाक हमारे सीने में गोली की तरह लगता है । हम आसमान से तो नहीं टपकते हैं न? आपकी तरह किसी मां की कोख से जन्में है । हाड–मांस का शरीर लिए । हमें तो अपने आप दु:ख होता है इस जीवन पर । आप लोग भी दु:खी कर देते हो ।"[4]

समाज किन्नर बच्चे को अपने पास रखना पसंद नहीं करता है । परिवार के जो सदस्य इन्हे अपने पास रखना चाहते हैं, समाज उन्हें भी मजबूर कर देता है कि उस बच्चे को किन्नर समाज को सौंप दें । यदि परिवार के लोग उसे पढ़ना भी चाहे या अन्य बच्चे की तरह उसकी परवरिश भी करना चाहे फिर भी समाज में बेइज़्ज़ती की डर से उस बच्चे को अपने से अलग कर देते हैं । समाज की असंवेदनशीलता का चित्रण महताब गुरु के माध्यम से किया है ।

महताब गुरु कहते हैं "आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबूजी और आपकी अपनी बेटी को अपने साथ रख नहीं सकते... दुनिया में बदनामी और हंसी हंसारात के डर से । हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग । लूली, लंगड़ी होती यह, कानी कोतरी होती, तो भी आप ही से अपने साथ रख सकते थे, इसलिए इसे अब इसके हाल पर ही छोड़ दीजिए । यही इसका भाग्य था, यही बदा ।"[5] महताब गुरु के माध्यम से वास्तविकता को चित्रित किया गया है ।

किन्नर समाज अस्पष्ट जेंडर और यौनिक पहचान के कारण अपने नागरिक अधिकारों से वंचित रहा है । लेकिन आज संविधानिक सुधार की वजह से किन्नरों को राजनीतिक क्षेत्र में अधिकार मिल गए है । समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण से तंग आकर किन्नर राजनीति में भाग लेकर समाज में सुधार लाना चाहते है । नाजबीबी कहती है– "जरुरत पड़ी तो भ्रष्ट लोगों के खिलाफ हथियार भी उठाऊंगी । हर गंदगी को जड़ से साफ कर दूंगी । दुनिया में शांति रहे और क्या चाहिए किसी को?"[6] इस प्रकार किन्नर सिर्फ ताली बजाना नहीं चाहता, तो समाज में सुख –शांति रहे इसलिए वह कुछ भी करने को तैयार है ।

भगवत अनमोल 'जिंदगी 50–50' उपन्यास किन्नर जीवन का यथार्थ चित्रण करता है । उपन्यास का नायक अनमोल का भाई हर्षा और बेटा सूर्या दोनों किन्नर है । हर्षा के किन्नर होने के कारण पिता द्वारा मारपीट और उपेक्षा मिलती है । घर और परिवार से वह प्रताड़ित होता रहता है । वह जैसे–जैसे बड़ा होता है समाज में उसका जीना और भी मुश्किल हो जाता है । घर से लेकर

बाहर तक उसका मजाक उड़ाया जाता है । उसके स्कूल की अध्यापिका भी उसका मजाक उड़ाते हुए कक्षा में शैतानी कर रहे बच्चों से कहती हैं–"अगर किसी ने बदमाशी की तो उसे हर्षा के पास बैठा दूंगी ।"[7] अपने प्रति किए जा रहे हैं व्यवहार को समझ पाना हर्षा के लिए कठिन हो जाता है । वह जैसे–जैसे बड़ा होता है, वैसे वैसे उसके पूरे शरीर में स्त्री मन की भावनाएं बलवती हो जाती है । वह अपनी माँ की साड़ी पहनता है और श्रृंगारर भी करता है । एक दिन लड़की के वेश में सजी संवरी हर्षा को उसके बाबूजी देखते हैं और उसे पीटते हुए कहते हैं–"तुझे ज्यादा शौक है लौंडिया बनने का! छोड़ आएंगे हिजड़ों के पास, तो यहां वहां–वहां छुछुआत भीख मांगता फिरेगा ।"[8]

समाज किन्नरों को हमेशा बुरी नजर से देखता है । जब किन्नर हर्षा पर बलात्कार होता है तब उसकी भावात्मक वेदना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है–"किन्नर होना अधूरापन ही तो है न? कैसे– कैसे पल आते । इस शरीर में सब भुगता, सब सहा जिस शरीर का लोग मजाक उड़ाते हैं, उसे ही रात को अपने मन बहलाने का जरिया बना लेते हैं । अच्छा है इन लोगों से दूर अपना एक समुदाय हैं ।"[9] समाज की किन्नर लोगों के प्रति सोच अच्छी न होने के कारण अपना अलग समुदाय बनाने के लिए किन्नर विवश होते हैं ।

इस उपन्यास में हर्षा तथा हर्षिता के माध्यम से एक किन्नर की प्रताड़ना को चित्रित किया है । वह अंत में एच.आय. व्ही. जैसे रोग से ग्रस्त होती हैं और वह आत्महत्या करके अपने हर पल मरे हुए जीवन का अंत करती है ।

**निष्कर्ष :**

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि सिर्फ जननांग दोष के कारण किन्नर समुदाय को समाज से उपेक्षित करना उचित नहीं है । यह समुदाय हमारी तरह ही मानवीय सुविधाओं से युक्त हैं । इन्हें भी दु:ख, दर्द पीड़ा होती है । यह भी हमारी तरह मानव है । परिवार और समाज से बहिष्कृत होकर जीना बहुत ही मुश्किल होता है । किन्नर समुदाय को समाज घृणा की दृष्टि से देखता है । इसलिए इनका जीवन दु:खों से भरा हुआ है । जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या फिर राजनीति हो। हर क्षेत्र में इनके प्रति देखने के रवैय्ये को बदलना होगा ताकि यह समुदाय भी समाज की मुख्यधारा से जुड़कर सामान्य जीवन जी सके।

**संदर्भ:**

1) रामचंद्र वर्मा, मानक हिंदी कोश, पृष्ठ– 77
2) नीरजा माधव, यमदीप, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 30
3) वही, पृ. 12
4) वही, पृ. 50
5) वही पृ. 87
6) वही, पृ. 118
7) भगवंत अनमोल, जिंदगी 50–50, राजकमल एंड सन्स प्रकाशन,
2017, पृष्ठ – 118
8) वही पृ. 167
9) वही पृ. 207